

डॉ. रॉबर्ट वानॉय, किंग्स, व्याख्यान 16

© 2012, डॉ. रॉबर्ट वानॉय, डॉ. पेरी फिलिप्स, टेड हिल्लेब्रांट

असीरिया द्वारा इसराइल का अंत (722 ईसा पूर्व), बेबीलोन द्वारा यहूदा का अंत (586 ईसा पूर्व)

IV. उत्तरी साम्राज्य का पतन 1. शल्लूम और येहू के घराने का अंत - 2 राजा 15:10-15

ठीक है, हम रोमन अंक IV के अंतर्गत "C" पर आ गए हैं: "उत्तरी साम्राज्य का पतन।" "1" है: "शल्लूम और येहू के घर का अंत, 2 राजा 15:10-15।" 2 राजा 15:10 में और इसके बाद आपने पढ़ा, "याबेश के पुत्र शल्लूम ने जकर्याह के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा। उसने लोगों के सामने उस पर हमला किया, उसकी हत्या कर दी और उसके बाद राजा बना।" जकर्याह, आप देखिए, हमने रोमन अंक III, ए से डी के तहत चर्चा की, और वह आखिरी राजा था जिसे हमने उत्तरी साम्राज्य में देखा था। 6 महीने के शासनकाल के बाद शल्लूम द्वारा उसकी हत्या कर दी गई। इससे वास्तव में वह भविष्यवाणी पूरी हुई जो बहुत पहले दी गई थी कि येहू का राजवंश चार पीढ़ियों तक जारी रहेगा। यदि आप 2 राजा 10, पद 30 पर वापस जाते हैं, तो आप येहू को लिखे शब्द को पढ़ते हैं: "क्योंकि तू ने वह काम पूरा करके जो मेरी दृष्टि में ठीक है अच्छा किया है, और अहाब के घराने के साथ वह सब कुछ किया है जो मैं ने करना चाहा था, तेरे वंशज चौथी पीढ़ी तक इस्राएल की गद्दी पर विराजमान रहेंगे।" आप जो पाते हैं वह यह है कि येहू के बाद, आपके पास यहोआहाज, योआश, यारोबाम द्वितीय और जकर्याह थे।

अब येहू के वंश का अंत शल्लूम द्वारा जकर्याह की हत्या से हुआ जो येहू के वंश का अंतिम था।

अब इस बिंदु से यह दिलचस्प है; उत्तरी साम्राज्य में हालात वास्तव में बिगड़ रहे हैं। शल्लूम के बाद बचे हुए राजाओं में से मनहेम, पकह्याह, पेकह और होशे हैं। मेनाहेम और होशे को छोड़कर उन सभी की हत्या कर दी गई। हालाँकि, होशे को अश्शूरियों ने कैद कर लिया था। शल्लूम, पकह्याह और पेकह की हत्या कर दी गई और होशे को अश्शूरियों ने पकड़ लिया। तो आप कह सकते हैं कि यह उत्तरी साम्राज्य के तेजी से पतन और उस राजवंश के अंत की शुरुआत है।

2. उत्तरी साम्राज्य के शेष राजा: मनहेम, पकह्याह, पेकह, और होशे
ए। मनहेम

तो "2" है: "उत्तरी साम्राज्य के शेष राजा: मनहेम, पकह्याह, पेकह और होशे।" सबसे पहले हम मनहेम पर चर्चा करेंगे, 2 राजा 15:14-22: "केवल एक महीने शासन करने के बाद शल्लूम की मनहेम ने हत्या कर दी।" वह एक सैन्य कमांडर था, और आप 2 राजा 15:13 में पढ़ते हैं: "यहूदा के राजा उज्जियाह के उनतालीसवें वर्ष में याबेश का पुत्र शल्लूम राजा हुआ। उसने सामरिया में एक महीने तक राज्य किया। तब गादी का पुत्र मनहेम तिस्रा से सामरिया तक गया, और सामरिया में याबेश के पुत्र शल्लूम पर आक्रमण किया, उसे मार डाला और उसके स्थान पर राजा बना।" फिर मनहेम ने 10 वर्ष तक राज्य किया। आप इसे पद 17 में पाते हैं: "उसने सामरिया में पूरे 10 वर्ष तक राज्य किया। उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया।"

आपने आयत 19 में पढ़ा कि उसने अश्शूर के राजा पूल को कर दिया। पुल तिग्लैथ-पिलेसर III है। तिग्लैथ-पिलेसर के इतिहास में हमें बताया गया है कि उसने 743 ईसा पूर्व में पश्चिम की ओर मार्च किया और विभिन्न लोगों से श्रद्धांजलि ली: कार्केमिश, हमाथ, टायर, बाइब्लोस और दमिश्क। परन्तु वह सामरिया के मेनाहेम का भी स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है। तिग्लैथ-पिलेसर का कहना है कि उसने सामरिया के मेनाहेम से कर लिया। 2 राजा 15 कहता है, "अश्शूर के राजा पूल ने देश पर आक्रमण किया, और मनहेम ने उसका समर्थन पाने और राज्य पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए उसे एक हजार किव्कार चाँदी दी।" वह संदर्भ प्रिचर्ड के *प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों*, पृष्ठ 283 में है, जो मेनाहेम द्वारा तिग्लैथ-पिलेसर को श्रद्धांजलि देने के संदर्भ में है।

बी। पकह्याह - 2 राजा 15:22-26 ठीक है, "बी" "पकह्याह, 2 राजा 15:22-26" है। "वह अपने पिता मनहेम का उत्तराधिकारी बना और दो वर्ष तक राज्य करता रहा।" आपने वह श्लोक 23 पढ़ा: "उसने यहोवा की दृष्टि में बुरा भी किया।" श्लोक 25: उसके एक अधिकारी, पेकह, जो अगला राजा था, ने उसके खिलाफ साजिश रची और उसकी हत्या कर दी और उसके बाद राजा बना। इसलिए उसके बारे में इसके अलावा बहुत कम कहा गया है कि उसने दो साल तक शासन किया और उसकी सेना के एक अधिकारी ने उसकी हत्या कर दी।

सी। पेकह - 2 राजा 15:27-32

तो "सी" है: "पेकह, 2 राजा 15:27-32।" वह पकह्याह के अधीन एक सैन्य अधिकारी था। उसने महल के विद्रोह का नेतृत्व किया और पेकाहिया की हत्या कर दी। आपके पास फिर से कुछ अटकलें हैं कि हत्या के लिए राजनीतिक प्रेरणा क्या थी। अधिकांश लोगों का मानना है कि पेका शायद असीरियन विरोधी गुट का नेता था। याद रखें, वह वही था जिसने यहूदा के आहाज पर हमला करने के लिए दमिश्क के रेजिन के साथ गठबंधन किया था ताकि आहाज को अश्शूर का विरोध करने के लिए उकसाया जा सके। तो आप देखिए, वह संभवतः असीरियन विरोधी गुट का प्रमुख है जबकि पकह्याह ने असीरिया के राजा को श्रद्धांजलि दी थी। पेका शायद इस बात को लेकर अलग सोच में था कि उस असीरियन खतरे से कैसे निपटा जाए। लेकिन किसी भी मामले में, उसने पकह्याह से छुटकारा पा लिया और फिर खुद शासन किया, और आप पद 27 में देख सकते हैं कि उसने 20 वर्षों तक शासन किया, इस प्रकार उसका शासनकाल काफी लंबा था। लेकिन आप श्लोक 29 में पढ़ते हैं: "उसके समय में, अश्शूर का राजा तिग्लत्पिलेसेर आया और उसने कई स्थानों पर कब्जा कर लिया: इय्योन, हाबिल बेतमाका, यानोह, केदेश, हासोर। उसने गिलियड, गलील और नप्ताली के सभी देशों को अपने कब्जे में ले लिया और लोगों को अश्शूर में निर्वासित कर दिया।" निःसंदेह, यह आहाज के तिग्लथ-पिलेसर के साथ गठबंधन के परिणामस्वरूप हुआ था ताकि उसे वही काम करने के लिए प्रेरित किया जा सके।

डी। होशे - 2 राजा 15:30-17:6 "डी" है: "होशे, 2 राजा 15:30 से 17:6।" बेशक, इसमें अध्याय 16 भी शामिल है जहां यह आहाज के बारे में बात करता है। आप पाएंगे कि उत्तरी साम्राज्य में क्या हो रहा है, हालाँकि जब दमिश्क अश्शूर के अधीन हो गया, तो आहाज द्वारा अश्शूर के साथ गठबंधन करने के बाद, अश्शूर ने दमिश्क पर हमला कर दिया। श्लोक 34: "और दमिश्क अश्शूर पर गिर गया।" ऐसा लगता है कि उस समय होशे ने पेका के खिलाफ एक साजिश का नेतृत्व किया और संभवतः असीरियन सहायता से, उत्तरी साम्राज्य में सिंहासन पर कब्जा कर लिया। अब यह

बाइबिल पाठ में नहीं कहा गया है। लेकिन तिग्लथ-पिलेसर के इतिहास में से एक में उन्होंने दावा किया है कि उन्होंने होशे को उत्तरी साम्राज्य के सिंहासन पर बिठाया था। यह *प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों*, पृष्ठ 284 में है। आपने 2 राजा 15, श्लोक 30 में पढ़ा, “तब एला के पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह के विरुद्ध षडयंत्र रचा। उसने उस पर हमला किया और उसकी हत्या कर दी।” होशे ने संभवतः एक ऐसे गुट का प्रतिनिधित्व किया जो प्रतिरोध के बजाय असीरिया के साथ सहयोग का पक्षधर था। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, तिग्लथ-पिलेसर का दावा है कि उसने होशे को उत्तरी साम्राज्य में सिंहासन पर बिठाया था और उससे श्रद्धांजलि ली थी।

अब, 727 ईसा पूर्व में, तिग्लथ-पिलेसर की मृत्यु हो गई, जिसके बाद शाल्मनेसर वी ने उत्तराधिकारी बनाया। ऐसा लगता है कि उस समय होशे ने मिस्र में दूत भेजे और असीरिया को अपनी श्रद्धांजलि देना जारी रखने से इनकार कर दिया, भले ही शुरू में वह ऐसा करने के पक्ष में था। आप 2 राजा 17:4 में पढ़ते हैं: “अश्शूर के राजा को पता चला कि होशे एक गद्दार था, क्योंकि उसने मिस्र के राजा के पास दूत भेजे थे, और उसने अब अश्शूर के राजा को कर नहीं दिया, जैसा कि वह वर्षों से करता आ रहा था।” वर्ष। इसलिये शाल्मनेसर ने उसे पकड़कर बन्दीगृह में डाल दिया। अश्शूर के राजा ने सारे देश पर आक्रमण किया, सामरिया पर चढ़ाई की और तीन वर्ष तक उसे घेरे रखा। होशे के नौवें वर्ष में अश्शूर के राजा ने सामरिया पर कब्जा कर लिया और इस्राएलियों को निर्वासित करके अश्शूर में भेज दिया। उसने उन्हें हलाह में, हाबोर नदी पर गोज़ान में, और मादियों के नगरों में बसाया।” इसलिए जब होशे ने अंततः असीरियन को श्रद्धांजलि देना जारी रखने से इनकार कर दिया, तो शाल्मनेसर ने सामरिया पर हमला कर दिया। उसने होशे को बन्दी बना लिया और तीन साल की घेराबन्दी के बाद शहर पर कब्जा कर लिया। हालाँकि, सरगोन, अगला राजा, वह है जो शहर पर अंतिम कब्जा करने का दावा करता है, लेकिन शायद शाल्मनेसर द्वारा इसे पूरा करने के बाद एक सफ़ाई अभियान से ज्यादा कुछ नहीं।

3. उत्तरी साम्राज्य का निर्वासन - 2 राजा 17:17-23 यह हमें "3" पर लाता है "उत्तरी साम्राज्य का निर्वासन, 2 राजा 17:17-23।" अध्याय 17 बताता है कि उत्तरी साम्राज्य निर्वासन में क्यों चला गया। मुझे लगता है कि आपको 2 राजा 17 के श्लोक 15 में बहुत संक्षेप में कहा गया है: "उन्होंने उसके

[प्रभु के] आदेशों और उस वाचा को अस्वीकार कर दिया जो उसने उनके पूर्वजों के साथ की थी और जो चेतावनियाँ उसने उन्हें दी थीं। वे व्यर्थ मूर्तियों के पीछे हो लिये और स्वयं निकम्मे बन गये। उन्होंने अपने आस-पास के राष्ट्रों का अनुकरण किया, हालाँकि प्रभु ने उन्हें आदेश दिया था, 'जैसा वे करते हैं वैसा मत करो,' और उन्होंने वही किया जो प्रभु ने उन्हें करने से मना किया था। आप देखिए, मुद्दा यह है कि उन्होंने अनुबंध तोड़ दिया।

अब जब हम व्यवस्थाविवरण 28 पर वापस जाते हैं और वाचा के शापों को पढ़ते हैं, तो उन वाचा के शापों में कई चीजें शामिल होती हैं: फसलों की विफलता से लेकर सूखे तक सभी प्रकार की आपदाएं, लेकिन जैसे-जैसे इज़राइल दूर जाना जारी रखता है, वाचा के शापों का अंतिम चरमोत्कर्ष उसे भूमि से निर्वासन में ले जाया जा रहा है, और यहाँ उत्तरी साम्राज्य के साथ यही हो रहा है। उन्होंने वाचा तोड़ दी और इसलिए, हम श्लोक 18 में पढ़ते हैं: "यहोवा इस्राएल से क्रोधित हुआ और उन्हें अपनी उपस्थिति से दूर कर दिया। केवल एक गोत्र, यहूदा ही रह गया, और यहूदा ने भी अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं का पालन न किया। उन्होंने इज़राइल द्वारा शुरू की गई प्रथाओं का पालन किया। इसलिए यहोवा ने इस्राएल के सभी लोगों को अस्वीकार कर दिया।" वे वाचा से विमुख हो गये थे।

4. सामरियों का आगमन ठीक है, आपकी शीट पर "4" है: "सामरियों का आगमन।" उस अध्याय के अंत में, आपने पढ़ा कि अश्शूर के राजा ने न केवल कई इस्राएलियों को निर्वासित किया, बल्कि उसने सामरिया के क्षेत्र में अन्य देशों के कई अन्य लोगों को भी बसाया। और पद 29 कहता है, "प्रत्येक राष्ट्रीय समूह ने उन अनेक नगरों में अपने-अपने देवता बनाए जहाँ वे बसे थे और उन्हें उन मन्दिरों में स्थापित किया जो सामरिया के लोगों ने ऊँचे स्थानों पर बनाए थे।" और श्लोक 33 कहता है, "उन्होंने प्रभु की आराधना की, परन्तु उन राष्ट्रों के रीति-रिवाजों के अनुसार अपने देवताओं की भी सेवा की, जहाँ से वे लाए गए थे।" तो आपके पास अश्शूरियों द्वारा सामरिया पर कब्ज़ा करने के बाद सामरिया के आसपास के इस पुनर्वासित क्षेत्र में समकालिक पूजा का उदय हुआ। मिश्रित जाति के वे लोग सामरिया के निकट आकर बस गये। उन्हें बाद के समय में सामरी लोगों के रूप में जाना जाने लगा, इसलिए जैसे ही हम नए नियम के समय में आते हैं, आप सामरी

लोगों के बारे में पढ़ते हैं। वे उन लोगों के वंशज हैं जो उत्तरी साम्राज्य की कैद के बाद सामरिया के क्षेत्र के आसपास फिर से बसाए गए थे।

ए. असीरियन साम्राज्य जो हमें यहूदा की पिछली शताब्दी में लाता है, और वह रोमन अंक वी है। पृष्ठ 3 के नीचे, "ए" है: "असीरियन साम्राज्य।" मैं यहां इस चार्ट पर वापस जाता हूं और वहीं से शुरू करता हूं जहां हमने छोड़ा था।

5. सन्हेरीब का उत्तराधिकारी एसरहदोन (681-669 ई.पू.) - 2 राजा 19:37 हम सन्हेरीब से होते हुए नीचे गए, लेकिन आप संख्या "5:" देखते हैं "सन्हेरीब का उत्तराधिकारी एसरहदोन (681-669 ई.पू.) आया, 2 राजा 19:37 कहता है सन्हेरीब के बारे में: "एक दिन, जब वह अपने देवता निस्रोक के मन्दिर में पूजा कर रहा था, उसके पुत्रों अद्रमेलोक और शारेज़ेर ने उसे तलवार से मार डाला और वे अरारत देश में भाग गए। उसका पुत्र एशरहदोन उसके बाद राजा बना।" तो 2 राजा 19:37 में आपके पास सन्हेरीब और एसरहदोन के बीच उत्तराधिकार का संदर्भ है। फिर एसरहदोन के बाद अशर्बनिपाल आता है, 669-633 ईसा पूर्व एशरहदोन की मिस्र के एक अभियान के दौरान मृत्यु हो गई, और उसका उत्तराधिकारी अशर्बनिपाल हुआ जो उसका सबसे बड़ा पुत्र था। शमस-सा-उकिन नाम का एक और बेटा था लेकिन अशर्बनिपाल सबसे बड़ा था। छोटे बेटे शमास-सा-उकिन ने बेबीलोन पर शासन किया। बेबीलोन अशूर के नियंत्रण वाला एक शहर था और शमस-सा-उकिन बेबीलोन में शासक बन गया। आखिरकार बेबीलोन में, शमास-सा-उकिन के नेतृत्व में विद्रोह छिड़ गया, दूसरे शब्दों में, अशर्बनिपाल का भाई। और इससे अशूरियों के बीच आंतरिक संघर्ष पैदा हो गया। 648 में लंबी घेराबंदी के बाद बेबीलोन पर कब्जा कर लिया गया, इसलिए वहां वास्तविक संघर्ष हुआ और शमास-सा-उकिन ने आत्महत्या कर ली। आप देखिए, अशूरबानिपाल और उसके भाई के बीच उस आंतरिक संघर्ष से असीरिया कुछ हद तक कमजोर हो गया, जो अधिक नियंत्रण पाने की कोशिश कर रहा था।

अशर्बनिपाल की लाइब्रेरी अशर्बनिपाल ने अपनी सैन्य उपलब्धियों के अलावा कुछ ऐसा किया

जो संभवतः अधिक महत्वपूर्ण था और वह था उन्होंने नीनवे में एक पुस्तकालय की स्थापना की, जिसकी खोज 1853 में हुई थी और जो कई प्राचीन ग्रंथों का स्रोत है। दूसरे शब्दों में, अशर्बनिपाल का पुस्तकालय संग्रह हमारे लिए असीरिया से प्राप्त बहुत से ग्रंथों को संरक्षित कर चुका है। वे उसकी लाइब्रेरी में पाए गए।

आईएसबीई (द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया) में एटी क्ले, *आईएसबीई* के पहले संस्करण में अशर्बनिपाल पर लेख में कहा गया है कि अशर्बनिपाल को "शायद पूर्व-ईसाई शताब्दियों में साहित्य का सबसे बड़ा ज्ञात संरक्षक माना जाता है।" ईसाई-पूर्व सदियों में साहित्य का सबसे बड़ा ज्ञात संरक्षक। उनके पुस्तकालय में पाए गए बहुत से ग्रंथों में द्विभाषी और त्रिभाषी शब्द सूचियाँ शामिल थीं, जो निश्चित रूप से समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं, और सुमेरियन और अक्कादियन को समझने के लिए भी महत्वपूर्ण थीं। आप आमतौर पर अशूरियों को योद्धा, क्रूर योद्धा मानते हैं; लेकिन अशर्बनिपाल में हमारे पास एक व्यक्ति था जो साहित्य में रुचि रखता था। यह पुस्तकालय हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ है। लेकिन हम अशर्बनिपाल वापस आएंगे। बेबीलोन में अपने भाई के साथ उस संघर्ष के कारण, असीरिया कमजोर हो गया, और उन्होंने मिस्र पर नियंत्रण खो दिया। जब 633 में अशर्बनिपाल की मृत्यु हुई, तो असीरियन साम्राज्य का अंत निकट था।

3. नीनवे का पतन और उसके परिणाम - आपकी शीट पर नहूम "3" है: "नीनवे का पतन और उसके परिणाम।" जैसा कि मैंने बताया, अशर्बनिपाल के शासनकाल का उत्तरार्ध कमजोर था। उनकी मृत्यु के बाद, बेबीलोन ने लगभग तुरंत ही फिर से विद्रोह कर दिया और अंततः असीरियन नियंत्रण से अपनी स्वतंत्रता स्थापित करने में सक्षम हो गया। वह नाबोपोलस्सर के अधीन किया गया था। और निःसंदेह, नाबोपोलास्सर बेबीलोन के शासकों की कतार में पहला बन गया। उनका उत्तराधिकारी नबूकदनेस्सर नाम का एक अधिक प्रसिद्ध व्यक्ति बना, लेकिन आप देखिए, बेबीलोन की शुरुआत नबोपोलास्सर से होती है। 633 में अशर्बनिपाल की मृत्यु हो गई; 612 तक, मेड्स और बेबीलोनियों ने मिलकर नीनवे पर हमला किया, जो असीरियन साम्राज्य की राजधानी थी, और इसे नष्ट कर दिया।

अब, जहां तक बाइबिल सामग्री का सवाल है, नहूम की पुस्तक, छोटे भविष्यवक्ता नहूम ने नीनवे के विनाश की भविष्यवाणी की थी। और तीन अध्यायों में आपके पास शहर की दुष्टता और उसके आने वाले विनाश का वर्णन है। वह 612 ईसा पूर्व में पूरा हुआ था

भले ही 612 में नीनवे का पतन हुआ, लेकिन यह असीरियन साम्राज्य का अंत नहीं था। हारान में एक नई राजधानी स्थापित की गई। हारान पश्चिम में है। और हारान में एक नई राजधानी स्थापित की गई जो लगभग 8 वर्षों तक चली। और उस समय, बेबीलोन की सेना का नेता नबूकदनेस्सर था, और बेबीलोनियों ने हारान में अश्शूरियों के साथ संघर्ष करना शुरू कर दिया और उन पर दबाव डाला। मिस्र के फिरोन नेको ने सोचा कि वह बेबीलोनियों के विरुद्ध अश्शूरियों की सहायता के लिए उत्तर की ओर आएगा। बाइबिल का पाठ पढ़ने से आप इससे परिचित हैं। जैसे ही वह उत्तर की ओर गया, योशियाह उसे उत्तर की ओर जाने से रोकने का प्रयास करने के लिए मगिदो के पास गया, और उस युद्ध में योशियाह मारा गया।

अश्शूरियों की सहायता निष्प्रभावी रही, और अश्शूरियों को बेबीलोनियों ने हरा दिया, जिससे 605 में हारान के ठीक पश्चिम में कार्केमिश में एक महान युद्ध हुआ। यहीं पर अश्शूरियों की अंतिम हार हुई और 605 में उनकी जीत के साथ बेबीलोनियों का प्रभुत्व सुरक्षित हो गया। इसने तत्कालीन बेबीलोन को प्राचीन निकट पूर्व की प्रमुख शक्ति के रूप में स्थापित किया।

2 राजा 23:29 वह पाठ है जो आपको उस प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संघर्ष में योशियाह की भागीदारी के बारे में बताता है। 2 राजा 23:29 कहता है, “जब योशियाह राजा था, तब मिस्र का राजा फिरोन नेको अश्शूर के राजा की सहायता करने के लिये परात नदी तक गया। राजा योशियाह युद्ध में उसका सामना करने के लिए निकला, परन्तु नेको ने उसका सामना किया और मगिदो में उसे मार डाला। योशियाह के सेवक उसके शव को एक रथ में मगिदो से यरूशलेम ले आये और उसे उसी की कब्र में दफना दिया।”

बी. नव-बेबीलोनियन साम्राज्य की शुरुआत आइए "बी" पर जाएं जो है: "नव-बेबीलोनियन साम्राज्य की शुरुआत।" आप कह सकते हैं कि नव-बेबीलोन साम्राज्य का पहला शासक नबूकदनेस्सर था, और उसने 605-562 ईसा पूर्व शासन किया था। आप देखिए, उसने नेबोपोलास्सर

की मृत्यु के बाद सिंहासन संभाला था, जिसने वास्तव में नव-बेबीलोन साम्राज्य की स्थापना की थी, आप एक ताकत के रूप में कह सकते हैं . लेकिन ठीक उसी वर्ष, 605, उसी वर्ष जब कारकेमिश की लड़ाई हुई, नबोपोलस्सर की मृत्यु हो गई, और नबूकदनेस्सर उसका उत्तराधिकारी बना। कार्केमिश के सीरिया और इज़राइल की ओर आगे बढ़ने के बाद नाबोपोलास्सर की मृत्यु ने संभवतः बेबीलोनियों को दक्षिण की ओर आगे बढ़ने में देरी कर दी क्योंकि नबूकदनेस्सर सिंहासन ग्रहण करने के लिए बेबीलोन वापस चला गया। वह 605 में है। लेकिन फिर 604 ईसा पूर्व तक, वह अगले वर्ष वापस आ गया और इज़राइल, विशेष रूप से दक्षिणी साम्राज्य पर दबाव डाला जाना शुरू हो गया।

सी. यहूदा के अंतिम राजा 1. मनश्शे - 2 राजा 21:1-18 ठीक है, यह हमें "सी" "यहूदा के अंतिम राजाओं" पर लाता है। और "1" "मनश्शे, 2 राजा 21:1-18" है। मनश्शे हिजकिय्याह का पुत्र था। आपने 2 राजा 20, श्लोक 21, पिछले अध्याय के अंत में पढ़ा, “हिजकिय्याह ने अपने पुरखाओं के साथ विश्राम किया। और उसका पुत्र मनश्शे उसके स्थान पर राजा हुआ।” मनश्शे का शासन 55 वर्ष तक चला। यह यहूदा में किसी भी राजा का सबसे लंबा शासनकाल था। इस प्रकार मनश्शे का शासन बहुत लम्बा था। वह यहूदा का सबसे दुष्ट राजा भी था, अपने पिता हिजकिय्याह से बहुत अलग था, जो एक अच्छा राजा था। परन्तु आप पद 2 में मनश्शे के बारे में पढ़ते हैं : “उसने उन जातियों के घृणित काम करके यहोवा की दृष्टि में बुरा किया जिन्हें यहोवा ने इस्राएलियों के साम्हने से निकाल दिया था। उसने उन ऊंचे स्थानों को फिर से बनाया जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह ने नष्ट कर दिया था; और उस ने बाल के लिये वेदियां बनाई, और अशेरा नाम खम्भा बनवाया, और सब तारागणोंको दण्डवत् किया। श्लोक 6: “उसने अपने ही पुत्र को अग्नि में बलिदान कर दिया, जादू-टोना और भविष्यवाणी करता था। उस ने यहोवा की दृष्टि में बहुत बुरे काम किए, और उसे क्रोधित किया।” श्लोक 11 कहता है, “यहूदा के राजा मनश्शे ने ये घृणित पाप किए हैं। उस ने अपने से पहिले एमोरी लोगों से भी अधिक बुराई की है, और अपनी मूरतोंके द्वारा यहूदा को पाप में फंसाया है। इस कारण इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, 'मैं यरूशलेम और यहूदा पर ऐसी विपत्ति डालने पर हूं, कि जो कोई भी इसके बारे में सुनेगा उसके कान झनझना उठेंगे।” और पद 13

के अंत में वह कहता है, “मैं यरूशलेम को ऐसे मिटा डालूँगा जैसे कोई बर्तन को पोंछकर उलट देता है।” इस प्रकार वह एक दुष्ट राजा था, और यहोवा ने मनश्शे के शासन के कारण यहूदा पर न्याय सुनाया।

हमने पाया कि अंततः उसे अश्शूरियों द्वारा बेबीलोन ले जाया गया। यह किंग्स में दर्ज नहीं है। लेकिन यदि आप 2 इतिहास 33 में जाते हैं, तो आप कविता 10 में पढ़ते हैं: “यहोवा ने उनके विरुद्ध अश्शूर के राजा के सेनापतियों को बुलाया, जिन्होंने मनश्शे को बंदी बना लिया, उसकी नाक में नकेल डाल दी, उसे पीतल की बेड़ियों से बांध दिया और उसे ले गए।” बेबीलोन को।” वह तब था जब बेबीलोन अभी भी असीरियन नियंत्रण में था। “अपने संकट में उसने अपने परमेश्वर यहोवा की कृपा माँगी और अपने आप को दीन किया और जब उसने उससे प्रार्थना की, तो प्रभु उसकी विनती से प्रभावित हुए और उसकी विनती सुनी; इसलिए वह उसे यरूशलेम और अपने राज्य में वापस ले आया। और वह उसके शासनकाल का अंत था। 2 किंग्स में उस घटना का जिक्र नहीं है।

आमोन - 2 राजा 21:19 मनश्शे का उत्तराधिकारी आमोन आया, 2 राजा 21:19। आप पढ़ते हैं: “जब आमोन राजा बना, तब वह बाईस वर्ष का था, और उसने यरूशलेम में दो वर्ष तक राज्य किया। उस ने यहोवा की दृष्टि में बुरा किया, और अपने पिता की सी चाल पर चला। श्लोक 23 कहता है कि उसके “अधिकारियों ने उसके खिलाफ साजिश रची और उसकी हत्या कर दी।” इसलिए उसने केवल दो वर्षों तक शासन किया और उसके अपने ही अधिकारियों द्वारा उसकी हत्या कर दी गई।

योशियाह - 2 राजा 22:1-23

1. कानून मंदिर में पाया गया, उसका उत्तराधिकारी योशियाह है। योशियाह एक महत्वपूर्ण राजा है। 2 राजा 22: 1-23, 30 2 इतिहास 34: 1-35, 27 में समान है। योशियाह के शासनकाल के दौरान, मेरे पास दो उप-बिंदु हैं। योशियाह के शासनकाल के दौरान कानून की पुस्तक मंदिर में पाई गई थी। याद रखें, उन्होंने एक सुधार की स्थापना की थी। मन्दिर की मरम्मत के दौरान व्यवस्था की पुस्तक की एक प्रति मिली और महायाजक हिल्कियाह उसे योशियाह के पास लाया और उसे

पढ़कर सुनाया। जब योशियाह ने यह सुना तो वह बहुत चिंतित हो गया। आप श्लोक 11 में पढ़ते हैं: "जब राजा ने व्यवस्था की पुस्तक के वचन सुने, तो उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले।" आयत 13 कहती है, "जाओ और मेरे लिए, लोगों के लिए और सारे यहूदा के लिए प्रभु से पूछो कि इस पुस्तक में क्या लिखा है। प्रभु का क्रोध बढ़ा है जो हम पर भड़का है, क्योंकि हमारे पुरखाओं ने इस पुस्तक की बातें नहीं मानीं; उन्होंने हमारे विषय में जो कुछ वहाँ लिखा है उसके अनुसार कार्य नहीं किया है।"

ऐसा लगता है कि कानून की यह किताब जो भी थी, इस बारे में कुछ विवाद है कि क्या यह संपूर्ण पेंटाटेच थी या क्या यह केवल व्यवस्थाविवरण की किताब थी। मुझे नहीं लगता कि हम इसे स्पष्ट रूप से तय कर सकते हैं। लेकिन ऐसा निश्चित रूप से लगता है कि व्यवस्थाविवरण इसका एक हिस्सा रहा होगा, और जो बात योशियाह को परेशान करती थी वह ये श्राप थे। यदि आप वाचा से विमुख हो गये, तो यही होगा। तब वह बहुत व्याकुल हुआ, और उसने हुल्दा नाम भविष्यद्वक्ता के पास इस विषय में सन्देश भेजा; और वह कहती है, श्लोक 15: "यह वही है जो इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है: उस मनुष्य से कहो जिसने तुम्हें मेरे पास भेजा है, 'यहोवा यों कहता है: मैं इस स्थान और इसके लोगों पर विपत्ति लाने जा रहा हूँ, जो कुछ उस पुस्तक में लिखा है उसके अनुसार यहूदा के राजा ने पढ़ा है।' श्राप जैसा लगता है. "क्योंकि उन्होंने मुझे त्यागकर पराये देवताओं के लिये धूप जलाया, और अपनी सब मूरतों के द्वारा मुझे रिस दिलाई है। मेरा क्रोध इस स्थान पर भड़केगा और शांत न होगा।" परन्तु क्योंकि योशियाह ने उत्तर दिया, प्रभु कहते हैं कि यह उसके दिन में नहीं होने वाला है। इसलिए निर्णय योशियाह के समय से आगे के लिए स्थगित कर दिया गया है।

2. योशियाह ने वाचा को नवीनीकृत किया तो 2 राजा 23 में, योशियाह ने वाचा को नवीनीकृत किया। आप इसे अध्याय 23 की संपूर्णता में पाते हैं। मूर्तिपूजा का सफाया हो गया है, और उन्होंने फसह मनाया और योशियाह के समय में वास्तविक सुधार किया। हम उस पर कोई विस्तार से विचार नहीं कर सकते. आप सोच सकते हैं कि इसके कारण, निर्णय को रद्द कर दिया जाएगा, लेकिन आप अध्याय 23, पद 26 के अंत में पढ़ते हैं, "तौभी प्रभु अपने भयंकर क्रोध की आग से दूर

नहीं हुए, जो यहूदा के विरुद्ध भड़क उठा था।" वह सब जो मनश्शे ने उसे क्रोधित करने के लिये किया था। इसलिए यहोवा ने कहा, 'जैसे मैंने इस्राएल को अपने सामने से हटाया, वैसे ही मैं यहूदा को भी अपने सामने से हटा दूँगा, और यरूशलेम को, उस शहर को, जिसे मैंने चुना है, और इस मन्दिर को, जिसके विषय में मैंने कहा था, 'वहाँ मेरा नाम होगा, अस्वीकार कर दूँगा।" ऐसा लगता है कि सुधार बहुत कम और बहुत देर से हुआ है।

यहोहाज़ - मूर्तिपूजा आपने पाया है कि अगले राजा के तुरंत बाद वे वैसे भी मूर्तिपूजा में वापस आ जाते हैं। यहोआहाज के अधीन वे सीधे उसमें गिर जाते हैं, और फिर न्याय टलता नहीं है। मैं यहोआहाज के बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहूँगा, 2 राजा 23:31-33। उसके बारे में केवल तीन छंद हैं लेकिन आप पद 32 में पढ़ते हैं: "उसने अपने पुरखाओं के समान ही प्रभु की दृष्टि में बुरा किया।" तो आप देखिए, योशियाह का सुधार जारी नहीं रहा। यहोआहाज को फिरौन नेको ने बंदी बना लिया और मिस्र ले गया जहां उसकी मृत्यु हो गई।

तब नेको ने यहोआहाज के भाई को यरूशलेम में सिंहासन पर बिठाया। उनके भाई का नाम एलियाकिम था। आप श्लोक 34 में पढ़ सकते हैं: "फिरौन नेको ने योशियाह के पुत्र एल्याकीम को उसके पिता योशियाह के स्थान पर राजा बनाया और एल्याकिम का नाम बदलकर यहोयाकीम रख दिया। परन्तु वह यहोआहाज को पकड़कर मिस्र ले गया, और वहां वह मर गया। उह, इसलिए नेको ने यहोआहाज के भाई, एल्याकीम - या यहोयाकीम - को उसी व्यक्ति को सिंहासन पर बिठाया।

5. यहोयाकीम - 2 राजा 23:34-24:5 तो यह हमें "5:" पर लाता है यहोयाकीम, 2 राजा 23:34 से 24:5 तक। प्रारंभ में, यहोयाकीम मिस्र का एक कुलीन था। आखिरकार उसे मिस्र के फिरौन ने सिंहासन पर बिठाया था। लेकिन 605 में कार्केमिश की लड़ाई के बाद वह बेबीलोन के अधीन हो गया। देखिए, 605 में कार्केमिश में अश्शूरियों पर बेबीलोन की जीत के साथ अंतरराष्ट्रीय शक्ति संरचना में वास्तव में बदलाव आया, ताकि उह, यहोयाकिम तब बेबीलोन के अधीन हो जाए।

आपको राजाओं या इतिहास में यहोयाकीम के बारे में बहुत कुछ नहीं बताया गया है; आपने

देखा कि केवल कुछ छंद हैं। लेकिन उसके बारे में आपके पास भविष्यवक्ता यिर्मयाह की किताब में और भी बहुत कुछ है। यह यिर्मयाह का समय है, यहोयाकीम का समय है। और इस समय, जहां बेबीलोन बढ़ रहा है, यिर्मयाह बेबीलोन की कैद की भविष्यवाणी कर रहा है और यहूदा के लोगों से बेबीलोनियों के अधीन होने का आग्रह कर रहा है, जो यहूदा के लोगों के लिए देशद्रोह जैसा लग रहा था। यिर्मयाह 26 में, यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की कि प्रभु का घर नष्ट हो जाएगा - मंदिर - वह स्थान जहां भगवान ने अपना नाम स्थापित किया था। यिर्मयाह कहता है, "वह नष्ट हो जाएगा," और लोग कहते हैं, "यह निन्दा है," और उन्होंने यिर्मयाह की मृत्यु के लिए कहा।

प्रभु ने यिर्मयाह की रक्षा की, और यिर्मयाह 36 में, यिर्मयाह ने एक पुस्तक लिखी जो राजा यहोयाकीम को पढ़ी गई। तुम वहां पढ़ो कि उसने उसके साथ क्या किया, यिर्मयाह 36, यहोयाकीम के चौथे वर्ष में, यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा और कहा, पद 2: "पुस्तक ले और जितने वचन मैं ने इस्राएल के विषय में तुझ से कहे हैं, उन सभी को उस पर लिख दे।", यहूदा, और जब से मैं योशियाह के राज्य में तुम से बातें करने लगा, तब से ले कर अब तक सब जातियाँ।" तो वह ऐसा करता है; वह इसे एक पुस्तक पर लिखता है और यहोयाकीम के पास ले जाता है। और श्लोक 23 में: "जब भी यहूदी ने पुस्तक के तीन या चार स्तंभ पढ़े, तो राजा ने उन्हें एक मुंशी के चाकू से काट दिया और उन्हें आग के बर्तन में फेंक दिया, जब तक कि पूरी पुस्तक आग में जल न जाए। राजा और उसके सब सेवकों ने, जिन्होंने ये सब बातें सुनीं, कोई भय न हुआ, और न अपने वस्त्र फाड़े। इसके बजाय राजा ने अपने बेटे यरहमील, अज्रीएल के बेटे सरायाह और अब्देल के बेटे शेलेम्याह को बारूक मंत्री और यिर्मयाह भविष्यवक्ता को गिरफ्तार करने की आज्ञा दी। परन्तु यहोवा ने उन्हें छिपा रखा था। और तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुंचा, 'एक और पुस्तक ले और उस पर वे सब शब्द लिख, जो पहली पुस्तक में थे, और यहोयाकीम से कह, यहोवा यों कहता है, तू ने वह पुस्तक जला दी, और कहा, तू ने ऐसा क्यों किया? तू इस पर लिखता है, कि बाबुल का राजा निश्चय आकर इस देश को नाश करेगा, और इस में मनुष्य और पशु दोनों को नाश करेगा?' इसलिये यहोवा यहोयाकीम के विषय में यों कहता है, कि दाऊद की गद्दी पर बैठनेवाला कोई न होगा। उसके शरीर को बाहर फेंक दिया जाएगा और दिन को गर्मी और रात को पाले का सामना करना पड़ेगा। मैं उसे और उसके पुत्रों और उसके सेवकों को उनकी दुष्टता का दण्ड दूँगा; मैं उन

पर और यरूशलेम में रहनेवालों पर, और यहूदा के लोगों पर वह सब विपत्ति डालूंगा जो मैं ने उन पर डाली है, क्योंकि उन्होंने मेरी बात नहीं मानी।” तो आपके पास यिर्मयाह की किताब में वह घटना है जो यहोयाकीम के समय के बारे में बहुत अधिक जानकारी भरती है।

2 राजा 24:1 में, आप पढ़ते हैं: “यहोयाकीम के शासनकाल के दौरान बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने देश पर आक्रमण किया, और यहोयाकीम तीन वर्ष के लिए उसका जागीरदार बन गया। परन्तु फिर उसने अपना मन बदल लिया और नबूकदनेस्सर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।” तो ऐसा लगता है कि कुछ समय के लिए यहोयाकीम ने बेबीलोन को कर दिया, लेकिन फिर उसने विद्रोह कर दिया। 601 तक, नबूकदनेस्सर ने विभिन्न लोगों द्वारा यहूदा पर छापे शुरू किए। 2 राजा 24:2 कहता है, “यहोवा ने उसके विरुद्ध बेबीलोनियाई, अरामी, मोआबी और अम्मोनी हमलावरों को भेजा। उसने उन्हें यहूदा को नष्ट करने के लिये भेजा।” लेकिन उस स्थिति में यहोयाकीम की मृत्यु हो जाती है, लेकिन उसकी मृत्यु कैसे हुई यह हमें नहीं बताया जाता है। यदि आप यिर्मयाह को देखें तो इसका तात्पर्य यह है कि उसकी हिंसक मृत्यु हुई थी, लेकिन हम नहीं जानते कि यह वास्तव में कैसे हुआ।

6. यहोयाकीन - 2 राजा 24:6-16 उसका उत्तराधिकारी यहोयाकीन है, 2 राजा 24:6-16। वह यहोयाकीम का पुत्र था; उन्होंने केवल 3 महीने तक लगाम लगाई। उसे जेकोन्या भी कहा जाता है। 597 में, बेबीलोनियाई यरूशलेम पर आक्रमण करते हैं। यहोयाकीन ने नबूकदनेस्सर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। आप इसे 2 राजा 24:12 में पाते हैं: “यहूदा के राजा यहोयाकीन, उसकी माता, उसके सेवकों, उसके सरदारों ने नबूकदनेस्सर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।” वह 597 है। और नबूकदनेस्सर ने एक नए शासक को सिंहासन पर बिठाया, और वह मत्तन्याह, या सिदकिय्याह है। उसके दो नाम हैं; वह इन दोनों नामों से जाना जाता है: मत्तन्याह या सिदकिय्याह। वह यहोयाकीन का चाचा था। दूसरे शब्दों में, वह यहोयाकीन के पिता यहोयाकीम का भाई था। और तुम मत्तन्याह, या सिदकिय्याह के विषय में पढ़ते हो, कि उस ने ग्यारह वर्ष तक शासन किया। लेकिन उसने भी बेबीलोन के नियंत्रण के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

7. बेबीलोनियों ने यरूशलेम पर कब्जा कर लिया - सिदकिय्याह (586 ईसा पूर्व)

586 में बेबीलोनियों ने यरूशलेम के विरुद्ध चढ़ाई की और उसे घेर लिया, अंत में इसे अपने कब्जे में ले लिया, मंदिर सहित शहर को नष्ट कर दिया, उन्होंने सिदकिय्याह, या मत्तन्याह को नबूकदनेस्सर के पास बंदी बना लिया, जो यहीं रिबला में था, दमिश्क के उत्तर में, जहां उन्होंने सिदकिय्याह के पुत्रों को उसकी आंखों के सामने मार डाला, और फिर उसे अंधा कर दिया। फिर वे उसे रिबला से बन्धुआ करके बाबेल ले गए, जहां वह मर गया।

8. गदल्याह को यहूदा का राज्यपाल नियुक्त किया गया इस बीच, गदल्याह को यहूदा का राज्यपाल नियुक्त किया गया। अब, उसे आम तौर पर अंतिम राजा के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया जाता है क्योंकि वह केवल नबूकदनेस्सर का नियुक्त व्यक्ति है, और जल्द ही उसकी हत्या कर दी गई थी। इसलिए उस समय को लेकर बहुत भ्रम है। सिदकिय्याह को बेबीलोन में बंदी बना लिए जाने के बाद गदल्याह को राज्यपाल नियुक्त किया गया था।

निर्वासन के चरण अब, मैं देख रहा हूँ कि हमारा समय समाप्त हो गया है। इस सारी चर्चा को समाप्त करने के लिए मैं यहां एक मिनट के लिए पारदर्शिता रखना चाहता हूँ। उत्तरी साम्राज्य और दक्षिणी साम्राज्य दोनों निर्वासन में चले गये। उत्तरी साम्राज्य अश्शूरियों को, दक्षिणी साम्राज्य बेबीलोनियों को। हम प्रश्न पूछ सकते हैं: निर्वासन कब शुरू हुआ? निर्वासन कब शुरू हुआ, इसके बारे में सटीक बिंदु बताना कठिन है। मैं उन 5 संदर्भों का उल्लेख करना चाहूँगा जो उस प्रश्न से संबंधित हैं। पहला है 2 राजा 15:29; लगभग 730 ईसा पूर्व तिग्लथ-पिलेसेर ने पेकह के शासनकाल के तहत इस्राएल के लोगों को बंदी बना लिया; वह 730 है। और फिर दूसरा, 2 राजा 18:11, 722-721 ईसा पूर्व में, शात्मनेसेर ने उत्तरी साम्राज्य के अंतिम राजा होशे के समय में इसराइल से बहुत अधिक लोग ले लिए। तो वास्तव में आपके पास उत्तरी साम्राज्य में दो निर्वासन हैं, एक 730 ईसा पूर्व में और दूसरा, अंतिम, 722-721 ईसा पूर्व में।

जब वह 2 राजा 24:1 में दक्षिणी साम्राज्य में आता है, यानी कारकेमिश की लड़ाई के ठीक बाद 605, तो आप कह सकते हैं कि यह निर्वासन का एक छोटा चरण है। यदि आप दानियेल 1:1-

4 को देखें, तो ऐसा लगता है कि दानियेल उस समय, 605 में, बाबुल में बंदी बना लिया गया था। यह यहोयाकीम के राज्य का तीसरा वर्ष है, और उस समय नबूकदनेस्सर ने यहूदा के कुछ बड़े जवानों के साथ कर लिया। तो आपके पास एक प्रारंभिक चरण है, आप कह सकते हैं, कैद की शुरुआत 605 में, कार्केमिश के ठीक बाद। फिर 4, 2 राजा 24:14-16, यानी 597 ईसा पूर्व, महान निर्वासन, यहोयाकीम सहित कई लोगों को बेबीलोन ले जाया गया। फिर अंत में, 2 राजा 25:11 और 12, 586 ईसा पूर्व जहां सिदकियाह के समय में यरूशलेम का अंतिम विनाश हुआ, और सिदकियाह को अंधा कर दिया गया और बेबीलोन ले जाया गया। तो आप देखिए, निर्वासन उत्तर और दक्षिण दोनों में एक तरह की प्रक्रिया थी जिसमें सामरिया और यरूशलेम से कई चरणों में लोगों को बंदी बनाया गया था, और यह इस पर निर्भर करता है कि आप यह प्रश्न कैसे पूछते हैं कि आप इसे कैसे परिभाषित करते हैं, आप कह सकते हैं कि निर्वासन शुरू हुआ 605 या यह 586 में शुरू हुआ, यह इस पर निर्भर करता है कि आप इससे क्या मतलब रखते हैं। यह कभी-कभी भ्रमित करने वाला हो सकता है, लेकिन यह चरणों में घटित हुआ। आप आमतौर पर 586 को निर्वासन की शुरुआत के रूप में सोचते हैं, लेकिन आप देख सकते हैं कि वास्तव में 586 से पहले बंदी बनाए गए थे।

ठीक है, प्रश्न या टिप्पणियाँ? मैं अंत में यहां पहुंच गया, इसके लिए मैं माफी मांगता हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि हम इसी के साथ निष्कर्ष निकालेंगे।

अन्ना ब्लॉमबर्ग द्वारा प्रतिलेखित
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया